Volume 6, ISSUE 4, (October-December, 2018) Impact Factor: 4.807
[ISSN: 2348 - 2605]

''निर्गुण संत साहित्य में कबीर का जनमानस पर प्रभाव''

डॉ. संगीता जगताप
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
चिखलदरा.महाराश्ट्र 9423426825

सारांषः *आज समाज हिंसा आतंक साम्प्रदायिकता जातिवाद भाशावाद की आग में झुलस रहा है ऐसे समय हमारा संत साहित्य जनमानस को षीतलता और एक जीवन दृश्टि प्रदान करता है। इस साहित्य को अपना कर चिंतन–मनन कर हम अपने कलुशित मन का परिश्कार कर सकते हैं। उनकी वाणियाँ षाष्व और सर्वकालिक है। निर्गुण और सगुण काव्यधाराओं का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। मैं उसमें से अल्प अंष लेकर कबीर पर अपनी बात आपके सामने प्रस्तुत करने का छोटासा प्रयास करने जा रही हूँ।*

हिन्दी साहित्य में निर्गुण संत साहित्य का विषिश्ट योगदान रहा है। इन संतों ने जनमानस में व्याप्त बुराईयों का विरोध किया तथा मानव मन के परिश्कार की भरपूर कोषिष की। आज का युग प्रदूशण का युग है और सबसे बड़ा खतरा वैचारिक प्रदूशण का है।

यह भारत भूमि षस्यष्यामलाम् हैं जिसने समय पर अनेक महापुरूशों को जन्म दिया। राम, कृश्ण, बुद्ध, गांधी, कबीर, महावीर को इस देष ने जन्म दिया यहाँ सिकन्दर, हिटलर हलाकू नहीं पैदा हुये। कबीर पर बात कहते हुये सबसे पहले मुझे भतृहरि का ष्लोक याद आता है–

जयन्ति ते सुकृतिनः रस सिद्ध कवीष्वराः।
नास्ति येशां यषः काय जरा मरणष्च न भयम्।

अर्थात उन रस सिद्ध कवियों की जय हो जय हो जिनके यष रुपी षरीर को न तो वृद्धावस्था का भय होता है न मृत्यु का।

कबीर के साहित्य का केंद्र मानव है, ये संत जनता के कवि थे जनता से निकले थे और जनता के कल्याणार्थ ही अपनी बात कह रहे थे। उनके वाणियों में जनमानस के लिये हर प्रष्नों का उत्तर मौजूद है, वैसे देखा जाये तो संसार में सभी कुछ नष्वर है, परन्तु मानवीय मूल्य षाष्वत है, जब तक ये मूल्य है, मानवता जीवित रहेगी इन्ही मानवीय मूल्यों को निर्गुण संत कबीर प्रतिस्थापित करना चाहते थे। अरबी कुरान में कबीर का अर्थ है 'महान' अर्थात कबीर अरबी षब्द है।

कबीर साहित्य सत्यं, षिवं और सुन्दरं से परिपूर्ण है। कबीर निरक्षर थे, उन्होंने स्वयं कहा है 'मसि कागद छुओं नहीं कलम गह्यों नहीं हाथ' परन्तु उनके हृदय में जनमानस की पीड़ा की छटपटाहट थी, वहीं दर्द उनके विद्रोह के रुप में फूट पड़ा, तभी तो वे कहते है –

देखो रे जग बौराना साधु देखो रे जग बौराना,
हिंदु कहै राम हैं मेरा, मुसलमान रहिमाना।
आपस में दाउ लरै मरत हैं भेद न कोउ जाना।

काव्य का जन्म ही करुणा और क्रोध से हुआ है। वाल्मीकि इसका उदाहरण है कबीर के काव्य का मुख्य स्वर क्रांति है, वे मानव के ह्रदय परिवर्तन के द्वारा क्रांति लाना चाहते थे इसलिये उनमें साहित्य में नैतिक मूल्यों की प्रतिश्ठा दिखाई देती है।

सत्य – सत्य ही धर्म है सत्य वह नहीं जो मुख से बोलते है, सत्य वह श्रेश्ठ है, जो मनुश्य के कल्याण के लिये बोला जाता है, इसलिये वे सत्य व्यवहार, सत्य कर्म, सत्य वचन, सत्य अनुभूति पर जोर देते है। समाज यदि सत्य के महत्व को समझले तो पाखंड और आडम्बर के दर्षन नहीं हो सकते इसलिये वे कहते है कि –

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके ह्रदय साँच है, ताके ह्रदय आप।।

आज भी झूठ की प्रषंसा और सत्य छटपटाता दिखाई देता है, कबीर भी अपने युग में सत्य और झूठ का संघर्श देख रहे थे। हमारे मस्तमौला संत कबीर चुप नहीं बैठ सकें और झूठ और सत्य को इस प्रकार प्रकट कर दिया।

साँचे कोई न पतिजई, झुठ जग पतयाय।
गली–गली गोरस फिरै, मदिरा बैठ बिकाय।।

कबीर का व्यक्तितत्व निर्भीक एवं विद्रोही था, वे उस चौरस्ते पर खड़े अपनी खुली आँखों से देखते थे और जो भी बाते वे कह रहे थे स्वानुभूत सत्य पर आधारित थी। तभी तो उनके जीवनकाल में उनके चाहनेवालों की भीड़ लग गई थी और संसार रुपी बाजार में खड़े वे सभी की खैर मांग रहे थे –

कबीरा खड़ा बाजार मे मांगे सबकी खैर।
ना काहुँ से दोस्ती ना काहुँ से बैर।।

संतोश – कबीर ये जानते थे कि मनुश्य की इच्छाएँ उन्नत है, जो तृप्त होने का नाम नहीं लेती। नित्य नया रुप धारण करती रहती है। तृशणावान मनुश्य कभी सुखी नहीं हो सकता, इसलिये तो प्राचीनकाल से आज तक षोशक और षोशितों के बीच संघर्श बना हुआ है, तभी तो कबीर कहते है –

सहज मिलै सो दूध सम, मांगे मिले सो पानि।
कहै कबीर वह रक्त सम जा मे ऐंचा तानि।।

इन पंक्तियों में क्या समाजवादी दृश्टि नहीं ? क्या कबीर कोई मार्क्सवादी से कम लगते है, आज षोशण के खिलाफ मंचों पर आवाज उठाई जा रही है, परन्तु कबीर तो साधारण लोगों को समझा रहे थे, इसके लिये जरुरी था मनुश्य अपनी आवष्यकताएँ कम करैं। जब आवष्यकताएँ कम हो जायेगी तो अपने आप वर्ग संघर्श में कमी आ सकती है, तभी तो कबीर कहते है –

सॉई इतना दीजिये जामे कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ साधु ना भूखा जाय।।

इन पंक्तियों में अपरिग्रह के साथ संतोश का भाव भी दिखाई देता है।

अहिंसा – 'मनसा वाचा कर्मणा' किसी को क्षति न पहुंचाना अहिंसा है। पूर्ण अहिंसा का अर्थ है प्राणीमात्र के प्रति दुर्भाव का पूर्ण अभाव। सत्य के साथ अहिंसा ही संसार में सबसे बड़ी षक्ति हैं परन्तु अहिंसा कायरपण नहीं है। गांधीजी ने एक बार कहा था ''जहाँ सिर्फ कायरता और हिंसा के बीच किसी एक के चुनाव की बात हो तो मैं हिंसा के पक्ष में रहूंगा।'' उस युग में मांसाहार का बहुल प्रचलन था यहाँ तक कि तांत्रिक द्वारा भी मांस मदिरा का सेवन किया जाता था। मांसाहारियों की निंदा करते हुये वे कहते है कि –

बकरी पाती खात है, ताकि काढ़ी खाली।

जो नर बकरी खात है, ताकों कौन हवाल।।

कबीर चूँकि संत थे और संत की व्याख्या ही है, जो सदआचरण वाला हो। ये संत मनुश्य तो क्या पषु पक्षियों तथा पेड, लता तक के प्रति भी अहिंसा का भाव रखते थे। उनकी करुणा तो अखंड ब्रम्हाण्ड के प्रति है तभी तो फूल पत्तियों तक को तोड़ने के लिये मना करते है।

ब्रम्हा पाती विश्णु डारी, फूल षंकर देव।
तीन देव प्रत्यक्ष तोड़िये, करिये किसकी सेवा।।

यह समाज कमजोरों दुर्बलों को नहीं जीने देता हर युग में इनका षोशण होता रहा है कबीर विषुद्ध मानवतावादी थे। उनका साहित्य मानवता से ओतप्रोत था, किसी दीन दुर्बल को दुखी देखकर उनका हृदय आहत हो जाता है जिन कबीर को विद्रोही कहते है वे किस करुणा से कह रहे है कि –

दुर्बल को न सताइये, जा की मोठी हाय।
मरे बैल के चाम से, लौह भस्म हो जाय।।

कर्म की महत्ता – कबीर को फक्कड क्रांतिकारी कवि कहा जाता है, परन्तु कबीर सहज से हृदय को परिवर्तित करना चाहते है वे व्यश्टि के माध्यम से समश्टि का परिश्कार करना चाहते थे, इन संत कवियों को यद्यपि निवृत्तिवादी कहा जाता है, परन्तु यदि उनका जीवन दर्षन देखा जाये तो उन्होंने कर्म की महत्ता स्थापित की। कबीर आजीवन कपड़ा बुनते रहे, इन कवियों का जीवन इस बात का प्रतीक है, कि कोई भी व्यवसाय नीच नहीं है, इन संतों ने छोटे से छोटे व्यवसाय को अपनाकर जीवन में श्रम करके उदर निर्वाह करें, वे स्वास्थ तथा आत्मनिर्भर समाज को देखना चाहते थे ऐसा समाज जिसका कोई भी व्यक्ति परामुखापेक्षी नहीं यही उनका मानवतावाद था।

प्रेम – कबीर का व्यापक धर्म प्रेम था, प्रेम हृदय जगत का व्यापार है, अतः मस्तिश्क से उसका कोई संबंध नहीं है। सच्चा प्रेम कामना रहित होता होता है, प्रेम जगत में उँच–नीच, धनी निर्धन, महान–षुद्ध का कोई भेद भाव नहीं है, उनकी दृश्टि मैं प्रेम ही धर्म है तभी तो वे कहते है –

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोय।
ढ़ाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।।

उनकी दृश्टि में यज्ञ दान तप तीर्थ यात्रा नमाज सभी से श्रेश्ठ प्रेम है कबीर की दृश्टि में प्रेम मार्ग पर चलने के लिये अहंकार का परित्याग आवष्यक है वहाँ अहं को कोई आवष्यक नहीं है इसीलिये कबीर कहते है –

यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नहीं।
सीस उतारै भुई धरै, तब पैठे घर माहीं।।

प्रेम रस तो ब्रम्हानंद के समकक्ष है जो इस रस का पान कर लेता है फिर मुक्ति भी उसके लिये त्याज्य हो जाती है।

कबीर जैसे निर्गुण संतों का मानव धर्म है जिसका केंद्र मानव होने के कारण संत साहित्य जगत् में प्रेम–घृणा, आष और वेदना का दर्पण है, यह कबीर जैसे प्रखर कवि की कोमल तथा प्रबल भावनाओं का प्रतिबिम्ब है। मानव मात्र में एकता स्थापित करने के लिये इन संतो ने महत् प्रयास किया आज हिन्दू मुस्लिम एकता की बात तो कही जा रही है,

परन्तु क्या कोई नेता इतनी हिम्मत से कह सकता है, जो निर्गुण संतो में से ही एक संत पलटूदास ने कहीं थी।

दोनों भाई हाथ पग, दोनों भाई कान।
दोनों भाई नैन है हिन्दुओ मुसलमान।।

आधुनिक युग में जब मनुश्य सभ्यता के उच्चतर सोपानों पर पहुंच रहा है, परन्तु उसका मन कहीं न कही आदिम अवस्था के खूंख्वार भावों को पाले है, जैसा कि दिनकर ने कहा ही है –

झर गई पूछ रोमांत पषुता का झरना बाकी है
बाहर–बाहर तन संवर चुका, अभी मन का संवरना बाकी है।।

और इस मनको संवारने का काम हमारे कबीर जैसे निर्गुण संत कर रहे थे। आज हम देख रहे है कि, सारा समाज स्वार्थ का अखाड़ा बन गया है। हम सब एक अंधी दौड में षामिल हो गये है। भौतिक सुखों को प्राप्त करने के लिये बेतहाषा भागे जा रहे है, इस स्पर्धा में उदात्तभाव और मानवीय मूल्य खोते जा रहे है, ऐसे समय कबीर साहित्य हमें कहीं न कहीं एक स्वस्थ दृश्टि प्रदान कर रहा है। आजभी वे जनमानस को प्रभावित करते है, वे मानव को कुछ करने को प्रेरित कर रहे है उनकी पंक्ति जो मानव जीवन को एक संदेष है–

कबीरा हम पैदा हुये जग हँसा हम रोय।
ऐसी करनी कर चलो हम हँसे जग रोय।।

निश्कर्शः

इस षोध पत्र का विशय निर्गुण साहित्य का जनमानस पर प्रभाव यह एक विस्तृत विशय है, मै तो कहूँगी कि षताब्दियों के बाद भी यह साहित्य जन जन का कंठहार है। आज भी रावण का पुतला जलाया जाता है, आज ढ़ाई अक्ष प्रेम का, घर का भेदी लंका ढ़ाय, कर्म प्रधान विष्व रचि राखा, परहित सरिस धरम नहीं भाई, चुगली करनेवाले को मंथरा, प्राण जाये पर वचन न जाई, दुख में राम के वनवास का उदाहरण आज भी दिया जाता है। अपने बच्चों का नटखट रुप कृश्णरुपम, विदेष में बसनेवाले भी व्यथा उधौ मोहि ब्रज बिसरत नाही आदि काव्य पंक्तियाँ क्या षिक्षित या अषिक्षित सभी की जबान पर मौजूद है भारतीय संस्कृति की जीवित रखने तथा सामाजिक मर्यादा को बनाये रखने में इन निर्गुण सगुण कवियों का विषेश योगदान है। जब तक भारत मे नैतिक मूल्य जीवित है, तब तक यह साहित्य षाष्वत है कहा भी गया है कि–

तत्व तत्व सूरा कही, तुलसी कही अनूठी।
षेश बची कबीरा कही, बाकी कही सो झूठी।।
इन सब संत और भक्तों को षत–षत प्रणाम।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. कबीर ग्रंथावली – ष्यामसुन्दरदास, पृश्ठ 191
2. कबी ग्रंथावली – सं. पारसनाथ तिवारी, पृश्ठ 109
3. संतवाणी संग्रह भाग 2, पृश्ठ 83
4. पलटूदास की वाणी, पृश्ठ 77